# Rishikashyapaproktam Shiva Dhyanam

# ऋषिकश्यपप्रोक्तं शिवध्यानम्

## Document Information

Text title : Rishikashyapaproktam Shiva Dhyanam

File name : RRiShikashyapaproktaMshivadhyAnam.itx

Category : shiva, shivarahasya, dhyAnam, aShTaka

Location : doc_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | bhImAkhyaH aShTamAMshaH | adhyAyaH 19 | 7-14||

Latest update : July 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

# ऋषिकश्यपप्रोक्तं शिवध्यानम्

(शिवरहस्यान्तर्गते भीमाख्ये)
हृत्पद्मसद्मगं देवं त्रिणेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
सर्वाभरणसंयुक्तं फुल्लपद्ममुखाम्बुजम् ॥ ७॥

त्रिपुण्ड्रेनोज्ज्वलत्फालं कुपाशाहि त्रिशूलभृत् ।
वृत्तबाहुं च निर्मृष्टप्रभाभरणशोभितम् ॥ ८॥

सर्वाङ्गसुन्दरीं देवीं चन्द्रार्धमकुटोज्ज्वलाम् ।
नासाभरणशोभाढ्यां रत्नाभरणभासुराम् ॥ ९॥

ताटङ्कद्वयसंशोभिमहेन्दुसदृशाननाम् ।
महागन्धजकस्तूरी पाटीरद्रवलेपिताम् ॥ १०॥

चम्पकैर्मल्लिकाजाजिमालतीसरभूषिताम् ।
ताम्बूलरागसंशोभि बिम्बाधरमनोहराम् ॥ ११॥

हस्तद्वयाग्रसंशोभिकिङ्किणीनूपुरोज्ज्वलाम् ।
फुल्लहेलकहस्ताग्रां हरवामाङ्कगां सदा ॥ १२॥

पार्श्वद्वये षडास्येन गजास्येन च शोभिताम् ।
ध्यायेदेवं महादेवं साम्बं चारुत्रिलोचनाम् ॥ १३॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं नीलकण्ठं शिवां तथा ।
महामरतकीगर्भसच्छायां चारुहासिनीम् ॥ १४॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते ऋषिकश्यपप्रोक्तं शिवध्यानं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । भीमाख्यः अष्टमांशः । अध्यायः १९ । ७-१४॥

- .. shrIshivarahasyam . bhImAkhyaH aShTamAMshaH . adhyAyaH 19 . 7-14..

Proofread by Ruma Dewan

*Rishikashyapaproktam Shiva Dhyanam*

pdf was typeset on July 5, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*